SHRI SADANAM PUTHIYAVEETIL BALAKRISHNAN

Shri Sadanam Puthiyaveetil Balakrishnan a maestro of Kathakali, a highly stylized and exquisite art form that reflects Indian mythology in its most intricate form.

2. Born on 15th January, 1944 in Taliparamba. North Kerala, Shri Balakrishnan had his Kathakali education at an early age from "Guru Kondiveetil Narayanan Nair Asan" under the patronage of the Late Brahmashri Kurumathur Narayanan Namboothiripad. He studied under the renowned gurus Natyacharyan Thekinkattil Ramunni Nair and Keezhupadam Kumaran Nair (Padmashree awardee) at Gandhi Seva Sadan Kathakali Academy for ten years, completing eight years of diploma and two years of post-diploma with Central Government Scholarship. His proficiency in Abhinaya, Choreography and Teaching the three facets of Kathakali was exceptional. In addition to being a world-renowned performer, Shri Balakrishnan is also a creative writer, director, and choreographer with over 35 original stories and choreographies to his name.

3. Shri Balakrishnan joined the International Centre for Kathakali New Delhi in the year 1974 as the senior most artist. He became the Principal and Director in 1980 and continued till 2007. Under his direction, the International Center for Kathakali, achieved international reputation and got recognition as a category-1 dance institution by the Government of India. The National School of Drama, Centre for Cultural Resources and Training, Indian Council for Cultural Relations, Delhi University, Vishva Bharti - Kolkata, Bhoomika, SPIC-MACAY, Bhaskara. Kalakshetra Foundation. Folkland, Thiranottam-Dubai, and the Association de Recherches des Traditions de l'Actor-France (ARTA) are a few of the places he has had the honour of providing his service. Post retirement from The International Centre for Kathakali, Delhi, he was associated with Kalakshetra Foundation (Rukmini Devi College of Fine Arts), Chennai as visiting fellow and Head of the Department of Kathakali.

4. Shri Balakrishnan has also presented papers on many subjects on Indian Classical Dance at various International Forums and published articles in different journals. Preparation of Manual and Syllabus for new Kathakali styles with Senior Fellowship from Ministry of Culture and Higher study and research on Northern style of Kathakali with the financial assistance of Central Sangeet Natak Academy are some of the studies conducted with the support of Ministry of Culture, Government of India.

5. Shri Balakrishnan is the recipient of numerous awards and honours like the prestigious Sangeet Natak Akademi Award in 2004, The Parishad Samman 1988, from Sahitya Kala Parishad (Delhi), Kerala Kalamandalan (Deemed University) award (2006) and fellowship (2017), Nritya Kalasagaram Award from Bhairavi Fine Arts, Cleveland USA (2015), Natana Bhaskara Award from Bharata Kalanjali & Bhaskara - 2003, Guru Pattikanthodi Ramunni Menon Award from Gandhi Seva Sadan Kathakali Academy - 2006, Gold Medal - Ayyappa Temple, Haridwar - 1999, Kala Snehi Award- 1995, Alapathi Ramachandra Rao Kala Peedham Award- 1991, Gold Medal, Mudralaya, London- 1990, Swathi Thirunal Nadalaya Award - 1986, Natyachaiya from prestigious Rajarajeshwara Temple - Taliparamba, Kerala, (2021) Kerala State Government Kathakali Award and Kerala Kshetra kala Academy Fellowship are some of the few.

श्री सदनम पुतियवीट्टिल बालाकृष्णन

श्री सदनम पुतियवीट्टिल बालाकृष्णन भारतीय पौराणिक कथाओं को परिष्कृत रूप में दर्शाने वाली अत्यधिक शैलीबद्ध और उत्कृष्ट नृत्य कथकली के प्रख्यात कलाकार हैं।

2. श्री बालाकृष्णन का जन्म 15 जनवरी 1944 को उत्तरी केरल के तालिपरम्बा में हुआ। उन्होंने अल्पायु में ही स्वर्गीय ब्रह्मश्री कुरुमाथुर नारायणन नंबूथिरिपाद के संरक्षण में "गुरु कोंडिवितिल नारायणन नायर आसन" से कथकली की शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने दस वर्ष तक गांधी सेवा सदन कथकली अकादमी में प्रसिद्ध गुरु नाट्याचार्यन थेकिनकट्टील रामुन्नी नायर और कीझुपदम कुमारन नायर (पद्मश्री से सम्मानित) से शिक्षा ग्रहण की, और केंद्र सरकार की छात्रवृत्ति से आठ वर्ष का डिप्लोमा और दो वर्ष का पोस्ट–डिप्लोमा किया। कथकली के तीन पहलुओं, अर्थात अभिनय, नृत्य–निर्देशन और शिक्षण में उन्हें असाधारण दक्षता प्राप्त थी। विश्व–प्रसिद्ध कलाकार होने के साथ–साथ, श्री बालाकृष्णन एक रचनात्मक लेखक, निर्देशक और नृत्य–निर्देशक भी हैं और 35 से अधिक मूल कथाएं और नृत्य–निर्देशन उनके नाम हैं।

3. श्री बालाकृष्णन वर्ष 1974 में वरिष्ठतम कलाकार के रूप में अंतरराष्ट्रीय कथकली केंद्र, नई दिल्ली में शामिल हुए। वह 1980 में इसके प्राचार्य और निदेशक बने और 2007 तक इस पद पर रहे। उनके निर्देशन में अंतर्राष्ट्रीय कथकली केंद्र को वैश्विक ख्याति प्राप्त हुई और भारत सरकार ने इसे श्रेणी–1 नृत्य संस्थान के रूप में मान्यता दी। उन्हें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, दिल्ली विश्वविद्यालय, विश्व भारती–कोलकाता, भूमिका, स्पिक–मैके, भास्कर, कलाक्षेत्र फाउंडेशन, फोकलैंड, थिरानोट्टम– दुबई, और एसोसिएशन डी रेचेर्चेस डेस ट्रेडिशन्स डी ल'एक्टर–फ्रांस (एआरटीए) जैसे संस्थानों में भी सेवा देने का सम्मान प्राप्त है। अंतरराष्ट्रीय कथकली केंद्र, दिल्ली से सेवानिवृत्त होने के बाद, वह विजिटिंग फेलो और कथकली विभाग के प्रमुख के रूप में कलाक्षेत्र फाउंडेशन (रुक्मिणी देवी कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स), चेन्नई से जुड़ गए।

4. श्री बालाकृष्णन ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारतीय शास्त्रीय नृत्य पर कई विषयों पर लेख भी प्रस्तुत किए हैं और विभिन्न पत्रिकाओं में उनके आलेख प्रकाशित हुए हैं। संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त वरिष्ठ फेलोशिप के तहत नई कथकली शैलियों के लिए मैनुअल और पाठ्यक्रम तैयार करना तथा केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी की वित्तीय सहायता से कथकली की उत्तरी शैली पर उच्च अध्ययन एवं अनुसंधान उनके द्वारा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किए गए कुछ अध्ययन हैं।

5. श्री बालाकृष्णन को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें प्राप्त पुरस्कारों में 2004 में प्रतिष्ठित संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, साहित्य कला परिषद (दिल्ली) द्वारा परिषद सम्मान 1988, केरल कलामंडलन (मानित यूनिवर्सिटी) का पुरस्कार (2006) और फेलोशिप (2017), भैरवी फाइन आर्ट्स, क्लीवलैंड यूएसए से नृत्य कलासागरम पुरस्कार (2015), भारत कलांजलि और भास्कर द्वारा नताना भास्कर पुरस्कार–2003, गांधी सेवा सदन कथकली अकादमी द्वारा गुरु पट्टीकंथोडी रमुन्नी मेनन पुरस्कार–2006, अय्यप्पा मंदिर, हरिद्वार द्वारा स्वर्ण पदक–1999, कला स्नेही पुरस्कार–1995, अलपति रामचन्द्र राव कला पीठम पुरस्कार–1991, मुद्रालय, लंदन द्वारा स्वर्ण पदक–1990, स्वाति तिरुनल नादालय पुरस्कार–1986, तालिपरम्बा, केरल के प्रतिष्ठित राजराजेश्वर मंदिर द्वारा नाट्यचैया (2021), केरल राज्य सरकार कथकली पुरस्कार और केरल क्षेत्र कला अकादमी के फेलोशिप शामिल है।